आनंद के दीये : प्रेम का उजियारा

इस पूरे ब्रह्मांड में सिर्फ इस पृथ्वी पर हरियाली है, सिर्फ यहीं मानवता है। इस पर नाज करो। मृत्यु तुम्हें समाप्त करे, उससे पहले दुनिया को प्यार दो, अपने जीवन को प्रेम करो

जीवन को प्रेम करो

ओशो

यह एक पागल दुनिया है। तुम्हें होश पूर्वक होना है। कम से कम व्यक्तिगत रूप से तो तुम मृत्यु केंद्रित न रहो। और इसे गिरा देने का एकमात्र ढंग यह है कि जीवन को प्रेम करो, प्रेम को प्रेम करो, हास्य को प्रेम करो, आनंद को प्रेम करो- मरने के बाद स्वर्ग में नहीं, अभी और

लोग अपने अंतस में बुद्ध को पाएंगे, उतना ही यह पृथ्वी ग्रह सुरक्षित है।

इस पूरे ब्रह्मांड में वैज्ञानिक सिर्फ अनुमान लगा सकते हैं कि कुछ और ग्रह भी जीवन से भरे कहीं हो सकते हैं। लेकिन कोई सुनिश्चित प्रमाण नहीं है। इस अनंत ब्रह्मांड में सिर्फ यह छोटी-सी पृथ्वी ही जीवन से भरी है।

सारा ब्रह्मांड एक तरह से मृत है। हरियाली, नदियां किसी भी ग्रह पर, किसी

जनवरी माह में प्रायः सभी समाचार-पत्रों में ओशो के प्रवचनांश प्रकाशित हुए। 1 जनवरी के राष्ट्रीय सहारा में लेख है : आत्म निरीक्षण का मौका है क्रोध। इस प्रवचनांश में ओशो के चित्र के साथ मोटे अक्षरों में उद्धरण है : जब क्रोध आ जाए तो उस आदमी को धन्यवाद दें जिसने क्रोध पैदा करवा दिया, क्योंकि उसकी कृपा, उसने आत्मनिरीक्षण का एक मौका दिया, भीतर से आपको जानने का एक अवसर दिया। उसको फौरन धन्यवाद दें।

क्रोध पर यह प्रवचनांश ओशो की पुस्तक नेति-नेति के 16 वें प्रवचन से लिया गया है। इसके प्रारंभ में ओशो कहते हैं : बुद्ध ने कहा है कि जब मैंने जाना तो मैंने पाया कि अद्‌भुत हैं वे लोग जो दूसरों की भूल पर क्रोध करते हैं। प्रश्न उठता है कि क्यों? तो बुद्ध ने कहा कि अद्‌भुत इसलिए कि भूल दूसरा करता है, दंड वे अपने को देते हैं। गाली मैं

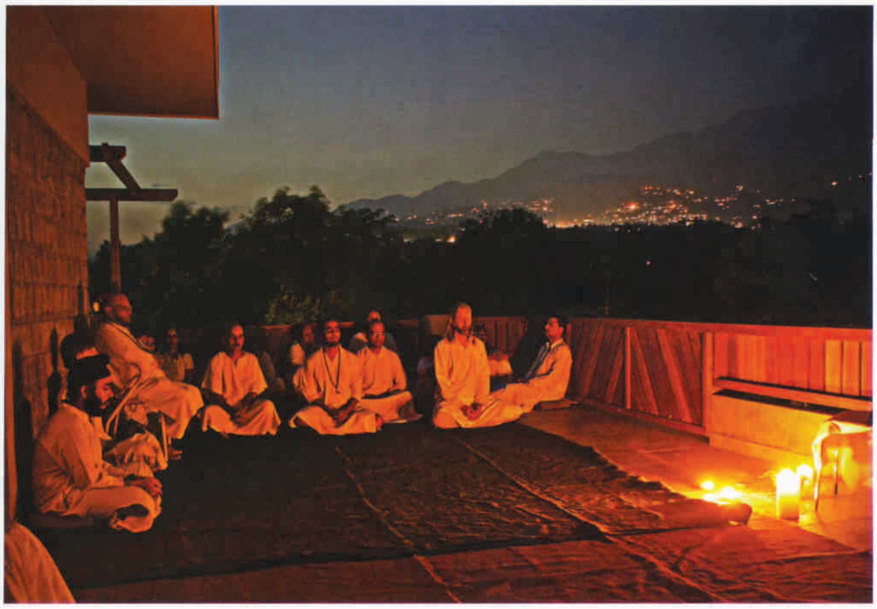

OSHO NISARGA

Nestled deep within the beautiful Dhauladhar Himalayan range, close to Dharamsala in Himachal Pradesh, Osho Nisarga is a haven for seekers on the inner journey. Taking centre stage for most of the activities at Osho Nisarga is the Osho *Shunya Mandir*, where programs to help a person develop to his full potential take place. For a truly divine experience, visit Osho Nisarga during the full moon and partake in the full moon meditation that takes place on the terrace of the *Shunya Mandir*. Not restricted only to seasoned seekers the center also extends itself to children with the Children's Program which is a perfect break from the tough competition in today's system. Osho Nisarga has found the perfect balance

और क्रोधित आप होंगे। दंड आप भोग रहे हैं, गाली मैंने दी। क्रोध में जलते हम हैं, राख हम होते हैं, लेकिन ध्यान वहां नहीं होता। इसलिए धीरे-धीरे पूरी जिंदगी राख हो जाती है और हम को भ्रम यह होता है कि हम जान गए हैं।

अमर उजाला (चंडीगढ़) में भी यही लेख छपा है।

ओशो सदा वर्तमान हैं, सदा समसामयिक

भारतीय मानस यही सोचता है कि परमात्मा को पाने के लिए वह ध्यान कर रहा है, लेकिन ओशो का मकसद कुछ और ही है।

ओशो बाह्य आकाश में ज्ञान की आंधी लाए। बुद्धि और मस्तिष्क में उलझी मनुष्य की ऊर्जा को आजाद कर उन्होंने उसके सामने सक्रिय ध्यान-प्रयोगों के एक से एक क्षितिज निर्मित किए। जब ओशो ने इन ध्यान विधियों का सूत्रपात किया तो कोई भी इन्हें ध्यान की संज्ञा देने के लिए तैयार ही न था। आहिस्ता-आहिस्ता, ओशो उन्हें इस स्थिति तक ले आए कि ऊपर से पागलन प्रतीत होने वाले ध्यान प्रयोगों को करने के लिए वे तैयार होने लगे। ये अजीबोगरीब विधियां करने के बाद उठने वाले असंख्य प्रश्न ओशो से पूछे गए। ये प्रश्न दार्शनिक नहीं हैं, जीवंत हैं। ओशो ने सभी साधकों को हजारों तरह के प्रश्न पूछने की इजाजत दी। एक स्थान पर उन्होंने यह भी कहा कि आदमी का मन जितने तरह के प्रश्न पूछ सकता है, उन सबके उत्तर मैंने दे दिए हैं। इसी कारण ओशो सदा वर्तमान हैं, सदा समसामयिक। 1986 में अमेरिका से लौटने के बाद उनसे पूछा गया था कि आपके शरीर त्याग के बाद ध्यान में मार्गदर्शन कौन करेगा? इस पर वे कहते हैं कि ध्यान उन पर नहीं, करने वाले पर निर्भर है। हवाएं, चांद-तारे, आकाश इन सबकी अनुभूति किस पर निर्भर है? अनुभोक्ता पर। अस्तित्व तो है ही, उसे अनुभव

ओशो का निर्वाण दिवस

वर्ष के प्रथम दिवस नयी दिल्ली के अमर उजाला में ओशो का प्रवचन है : जीवन को प्रेम करो। ओशो कहते हैं : इस पूरे ब्रह्मांड में इस पृथ्वी पर हरियाली है, सिर्फ यहीं मानवता है। इस पर नाज़ करो। मृत्यु तुम्हें समाप्त करे, उससे पहले दुनिया को प्यार दो। अपने जीवन को प्रेम करे।

आइये, अब आपको हैदराबाद ले चलें, जहां स्वतंत्र वार्ता में प्रतिदिन ओशो के प्रवचन प्रकाशित होते हैं। इसमें रसौ वै सः स्तंभ के अंतर्गत पहली जनवरी को ओशो का प्रवचनांश छपा—आवाज़ की बुलंदी और झूठ। इसमें मोटे शब्दों में उद्धरण है—जब भी तुम राजनीतिज्ञों को ऊंची आवाज़ में बड़े से बड़े झूठ बोलते हुए देखो, तुम्हें पता होना चाहिए, झूठ सिर्फ ऊंची आवाज़ में ही बोले जा सकते हैं। आवाज़ की बुलंदी झूठों को छुपाती है। सत्य को फुसफुसाकर कहा जा सकता है, लेकिन झूठों की सिर्फ जोर से ही घोषणा की जा सकती है। उनकी ताकत आवाज़ में होती है। सत्य स्व-प्रमाणित है, उसे केवल फुसफुसा देना काफी है।

पटना के हिंदुस्तान टाइम्स में 1 जनवरी को इन्नर वॉयस के अंतर्गत 'बी जस्ट युरसेल्फ' नीलांशु रंजन का लेख है, जिसमें ओशो की देशना पिरोयी है कि किसी और की प्रतिलिपी नहीं होना है, स्वयं होओ। जीसस, बुद्ध, नानक, गांधी जैसे महान व्यक्तियों की भी नकल नहीं बनना है। ओशो कहते हैं : स्वयं में उतरो। अस्तित्व से नाता जोड़ो। प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा की अनुपम कृति है।

बैंगलुरु के डेक्कन हेराल्ड में अमृत साधना का लेख 2 जनवरी को प्रकाशित हुआ, जिसमें नये वर्ष के प्रारंभ में नए संकल्प करने के प्रति सावधान करते हुए ओशो की अंतर्दृष्टि प्रतिपादित की गयी है। ये संकल्प और ये प्रतिज्ञाएं अहंकार के ही दूसरे नाम हैं। इसी दिन नयी दिल्ली के महामेधा में ओशो हास्य दिवस की खबर छपी है, जिसके लेखक हैं सुरेश जिंदल, यमुना नगर, हरियाणा। ओशो कहते हैं : गंभीरता एक तरह की छूत की बीमारी है...। संपूर्ण विकास के लिए हास्य को स्थान देना जरूरी है।

छूत की बीमारी है...। संपूर्ण विकास के लिए हास्य को स्थान देना जरूरी है।

इंदौर की नयी दुनिया में 2 जनवरी को लेख है : ओशो प्रेमियों ने मनाया ऊर्जा उत्सव। नए वर्ष के स्वागत में 'नए पंख, नई उड़ान' का ओशो समवेत ध्यान केन्द्र में आयोजन हुआ।

4 जनवरी को नयी दिल्ली के स्टेट्समैन अखबार में 'रिंगिग इन कलर्स एंड लाफ्टर' शीर्षक के साथ ओशो वर्ल्ड गैलेरिया, नयी दिल्ली में होने वाली कलात्मक गतिविधियों का अति सुंदर लेख है। इसमें मा प्रेम नैना का वक्तव्य है कि हम प्रतिवर्ष 1 जनवरी को विश्व हास्य दिवस का आयोजन करते हैं। इस वर्ष हमने बच्चों की बनाई हुई पेंटिंग्स की प्रदर्शनी साथ में जोड़ी है, जिसकी कमाई को हम 'प्रयास' एन.जी.ओ. को दे देंगे। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कवि श्री राकेश सोनी ने अपनी हास्य-व्यंग्य की अनूठी रचनाओं से सभी को खूब हंसाया।

जयपुर के दैनिक भास्कर ने 4 जनवरी को 'आनंद के दीये से प्रेम का उजियारा' ओशो का प्रवचनांश प्रकाशित किया। इसकी मुख्य पंक्ति में लिखा है : जो आदमी आनंद को उपलब्ध नहीं हुआ, उस आदमी के जीने में प्रेम

ध्यान एक ऊर्जा की घटना है

उसका अ है

कि जीवन विपरीत ध्रुवों के बीच गति करता है-एक सीधी रेखा में नहीं। ऊर्जा चक्कर लगाती है निगेटिव से पॉजिटिव, पॉजिटिव से निगेटिव। इस तरह ऊर्जा सर्किट में घूमती है-विपरीत ध्रुव का उपयोग करती हुई।

मन एक सीधी रेखा में, एक सीधी सरल रेखा में गति करता है। वह कभी एक साथ विपरीत में गति नहीं करता यह विपरीत का इन्कार करता है। मन एक में विश्वास करता है और जीवन का भरोसा दो में है।

मन जो भी निर्मित करता है, वह हमेशा एक का चुनाव करता है। मन जब मौन का चुनाव करता है-मन जब जीवन द्वारा निर्मित सारे शोरगुलों से ऊब चुका है और मौन होना चाहता है तब वह हिमालय में चला जाता है। तब वह

सभी प्रकार की ऊर्जाओं के संबंध में एक ारभूत बात समझ लेनी है, और यह समझने लए मूलभूत नियम है कि ऊर्जा दो विपरीत में बहती है। केवल यही एक ढंग है उसके का और कोई दूसरा ढंग नहीं है उसके का। वह द्वन्द्वात्मक ध्रुवों में बहती है।

किसी भी ऊर्जा को गतिमान होने के लिए ीत ध्रुव की जरूरत होती है। यह विद्युत की है जो निगेटिव और पॉजिटिव ध्रुवों के बीच ी है। यदि केवल निगेटव ध्रुव हो तो विद्युत प्रवाह नहीं होगा या यदि केवल पाजिटिव हो तो भी विद्युत का प्रवाह नहीं होगा। दोनों ही ध्रुव जरूरी हैं और जब दोनों ध्रुव हैं, तब वे विद्युत धारा को बनाते हैं; तब त की ऊर्जा जन्मती है।

और ऐसा ही नियम है अन्य सभी ऊर्जा ाओं के लिए। जीवन सतत प्रवाहमान है- और स्त्री के बीच, दो ध्रुवों में। स्त्री जीवन- का निगेटिव ध्रुव है और पुरुष पाजिटिव है। वे विद्युत ऊर्जा हैं-इसीलिए उनके बीच इतना आकर्षण है। पुरुष अकेला हो तो जीवन विलीन हो जाएगा, अकेली स्त्री के साथ कोई जीवन घटित न हो सकेगा, केवल मृत्यु होगी। स्त्री और पुरुष के बीच एक संतुलन होता है। स्त्री और पुरुष के बीच-इन दो

ओशो

ध्रुवों के दो किनारों के बीच जीवन की नदी बहती है।

जहां कहीं तुम देखोगे, तुम पाओगे कि यही ऊर्जा ध्रुवों में गतिमान है, अपने को संतुलित करती हुई।

ध्यान के लिए यह ध्रुवीयता बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि मन तर्कसंगत है और जीवन द्वन्द्वात्मक है। जब मैं कहता हूं कि जीवन द्वन्द्वात्मक है तो

मौन होना चाहता है, वह किसी प्रकार के शोरगुल से कुछ भी लेन-देन नहीं रखना चाहता। यहां तक कि पक्षियों के गीत भी उसे परेशान करेंगे, वृक्षों से गुजरती हुई हवा की आवाज भी उसे बाधा जान पड़ेगी। मन शांति चाहता है, उसने एक रेखा, एक ध्रुव को चुन लिया है। अब विपरीत का पूर्णतः नकार कर देना होगा।

अब यह व्यक्ति जो हिमालय में रहता है- शांति की खोज में, दूसरों से बचता हुआ, विपरीत से भागता हुआ-यह व्यक्ति मृतवत हो जाएगा, यह निश्चित ही मंद हो जाएगा। जितना वह मौन का चुनाव करेगा उतना ही वह जड़ होता जाएगा, क्योंकि जीवन के लिए विपरीत चाहिए, विपरीत की चुनौती चाहिए।

एक भिन्न ही प्रकार का मौन है जो दो विरोधों के बीच होता है। पहला, उपरोक्त मृत मौन है, कब्रिस्तान का मौन। मृत व्यक्ति मौन है, लेकिन तुम मृत होना नहीं चाहोगे।

(क्रमशः)

नहीं होता है। आनंद ही प्रेम बांटता है।...और अंत में...आनंद का दीया जले तो प्रेम का प्रकाश चारों तरफ फैलना शुरू होता है। प्रेम मेरे लिए वही अर्थ रखता है जो परमात्मा की साधना रखती है।

5 जनवरी को कुछ ऐसा ही संदेश एशियन एज के माध्यम से ओशो के लेख से अंग्रेज़ी में मिला। 7 जनवरी को जालंधर के अखबार 'अजीत समाचार' में 'संभावना के बीच खिलते हैं चिंतन के फूल' कृष्ण-स्मृति की क्रमबद्ध श्रृंखला के अंतर्गत है। 9 जनवरी की स्वतंत्र वार्ता ने ओशो के लेख के माध्यम से अपने पाठकों को 'स्वयं को प्रेम करना सीखो' की सीख दी है। इसमें मुख्य वचन है : सर्वप्रथम और सर्व प्रमुखतः स्वयं को प्रेम करो। और यदि तुम स्वयं को प्रेम कर सको तो बड़ी सहजता से, बिना किसी दिखावे के बड़े स्वाभाविक ढंग से दूसरों को तुम्हारा प्रेम मिलने लगेगा। प्रेम से भरा हुआ व्यक्ति जल्दी ही छलकने लगता है। तुम्हारे भीतर के छोटे-से पात्र में तुम्हारा प्रेम नहीं समा सकता। तुम्हारा प्रेम

रसो वै सः

ओशोवाणी

तो जैसे ही वे मंच से नीचे उतरे, लोग जाने लगे। मुझे माइक्रोफोन में चिल्लाकर कहना पड़ा कि जो जहां भी है वहीं रुक जाये और स्वभावतः उन्होंने ऐसा आदमी कभी नहीं सुना था और मैंने उनसे कहा, अपनी-अपनी जगहों पर वापस बैठ जायें। आप मुझे नहीं जानते हैं। मुझे सिर्फ पांच मिनट दें और फिर मैं आपको बाहर जाने का

अविकसित बुद्धि के हैं, क्योंकि जिन शास्त्रों के वे उद्धरण दे रहे थे, उनकी व्याख्या करना उन्हें पता नहीं। उनकी सब व्याखाएं गलत व्याख्याएं हैं और मैं एक-एक मुद्दे को लेकर उनका खंडन करने चल रहा हूं।

और फिर मैंने लोगों से कहा, पांच मिनट खत्म हुए, कोई भी जो जाना चाहता हो फौरन चला जाये। उन सारे दस हजार लोगों में से एक भी व्यक्ति नहीं गया। अब जाना बहुत मुश्किल था। वे जानना चाहते थे कि मैं उन मुनि के विरोध में वास्तव में क्या कहने जा रहा हूं। और मैंने उन मुनि का पूरा-पूरा खंडन किया, परिपूर्ण विस्तार के साथ -पीछे सुधार के लिए कुछ न छोड़ते हुए। वे मुनि ईमानदार आदमी रहे होंगे।

अभी भी कुछ लोग हैं जो उस सभा में मौजूद रहे होंगे। एक

आदमी बड़ा अजीब है

समा सकता। तुम्हारा प्रेम तुमसे बहुत बड़ा है।

11 जनवरी को एक बड़े अखबार में 'ध्यान एक ऊर्जा की घटना है' ओशो का प्रवचनांश प्रकाशित हुआ है। यह क्रमशः जारी है। आगामी अंक में हम इसका और जिक्र करेंगे।

12 जनवरी को दिव्य हिमाचल, चंडीगढ़ के आस्था स्तंभ में 'ईश्वर का दूसरा नाम अज्ञेय' प्रकाशित हुआ। 14 जनवरी को 'डेली न्यूज़' में ओशो का लेख है : स्वर्ग के फूल मुरझाते नहीं। 15 जनवरी को दैनिक भास्कर, जयपुर में 'हमें भटकाता है आधा सच' तथा 16 जनवरी को 'बिना विवेक का साहस खतरनाक' ओशो के लेख छपे हैं।

मासिक पत्रिका गृहलक्ष्मी के जनवरी अंक में ओशो का प्रवचनांश है : विवाह एक अप्राकृतिक व्यवस्था है। इस लेख के अंत में ओशो कहते हैं : मेरा सुझाव है कि विवाह हनीमून के बाद होना चाहिए, उससे पहले कभी नहीं। यदि सब ठीक-ठाक रहता है तो फिर शादी होनी चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका 'ल' ओफिसिएल' जो मूलतः फ्रांस की है, उसका जनवरी अंक आध्यात्मिकता विशेषांक है। इसमें धर्मशाला स्थित ध्यान केन्द्र 'ओशो निसर्ग' के चित्रों का प्रकाशन हुआ है, साथ ही ध्यान में नृत्य-मग्न ओशो शिष्य स्वामी सतीश सत्यार्थी का सचित्र साक्षात्कार उल्लेखनीय है।

ईश्वर का दूसरा नाम अज्ञेय

जीवन में सभी कुछ अज्ञात है-वह सब भी, जो हम सोचते हैं कि ज्ञात है। सुकरात का वचन है कि जब मैं युवा था, तो सोचता था कि बहुत कुछ जानता हूं। जैसे-जैसे उम्र बढ़ी, जानना भी बढ़ा, लेकिन एक अनूठी घटना भी साथ-साथ, कदम से कदम मिलाते हुए चली, जितना ने यह वचन कहा था, उसके थोड़े ही दिन बाद डेल्फी की पुजारिन ने घोषणा की कि सुकरात दुनिया का सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी है।

लोगों ने सुना हैरानी में पड़े। सुकरात कहता है: मैं कुछ नहीं जानता, बस इतना ही जानता हूं। और डेल्फी की पुजारिन की बात कभी झूठ नहीं गई थी। और वह कहती है: सुकरात जगत का सबसे बड़ा महाज्ञानी है। वे लोग सुकरात के पास आए। सुकरात से निवेदन किया कि देवी का आविष्ट अवस्था में यह उद्घोष हुआ है। सुकरात ने कहा: देवी बेहोश थी, मैं होश में हूं। मैं फिर कहता हूं कि कुछ भी नहीं जानता हूं। देवी गलत हो सकती है, सुकरात गलत नहीं हो सकता। देवी मुझे बाहर से जानती है, मैं स्वयं को भीतर से जानता हूं। लौट जाओ और देवी को कहना कि तुम्हारी एक भविष्यवाणी गलत हो गई। कम से कम एक, तो निश्चित ही गलत हो गई।

लोग वापस लौट कर देवी से कहे और देवी हंसी, उसने कहा: कहना सुकरात

अहा ज़िंदगी के जनवरी तथा फरवरी अंकों में अमृत साधना तथा स्वामी चैतन्य कीर्ति के लेखों में ओशो जीवन दृष्टि अनुस्यूत है। इस प्रकार संदेश भालेकर नागपुर की मराठी अखबारों में ओशो जीवन-दर्शन को प्रस्तुत करते हैं—विशेषकर ओशो जन्मोत्सव तथा पुण्यतिथि पर। इनके अतिरिक्त भी देश-विदेश की अखबारों व पत्रिकाओं में भी बहुत कुछ प्रकाशित हुआ है, उनका उल्लेख करने के लिए पत्रिका में और स्पेस देना संभव नहीं है। इस बार इतना ही। शेष फिर।